श्री

श्रीमंत सरकार सयाजीराव महाराजा गायकवाड

सेनाखासखेल समशेरबहादूरना आश्रयनीचे

बालासंगीतमाला.

(गुजराती)

पुस्तक पेहेलूं

(लेखन विधिपूर्वक)

किमत पांच आना कल्दार.

श्री

श्रीमंत सरकार सयाजीराव महाराजा गायकवाड
सेनाखासखेल समशेरबहादूरना आश्रयनीचे

बालासंगीतमाला.

(गुजराती)

पुस्तक पेहेलूं

(लेखन विधिपूर्वक)

आपुस्तक
वडोदरानी कन्याशाळाना गायन वर्गना उपयोग सारूं

प्रोफेसर मौलाबक्ष घीसेखान

एमणे तयार कर्यूं ते

मुंबई—पयामिली प्रिंटिंग प्रेस
अने
शहर वडोदरामध्यें
"वडोदरावत्सल" छापखानामां छाप्युं

सने १८९१

किंमत पांच आना कलदार

प्रस्तावना.

गायन ए देवताइ चीज छे. जानवरो सुद्धां तेमां गरक थाय छे. तो माणस जात तेमां तल्लीन थाय ए देखीतुं छे. मनरंजन करवुं ए संगीतनो मुख्य आशय छे. मननी एकाग्रता करवानुं ए मोटुं साधन छे. अने तेथीज भक्तराजो अने मंदीरवाळा स्तुति प्रार्थना वखत तेनो उपयोग करे छे. एवा साधनवडे चारे पदार्थ—धर्म, अर्थ, काम, अने मोक्ष—पामी शकाय एम ऋषिओ लखी गया छे ते खोटुं नथी.

प्राचीनकाळे आ हिंदुस्तानमां संगीत विद्यानो घणो प्रचार हतो. बीजा प्रांतोनी पेठे गुजरात पण ए शास्त्रने माटे प्रसिद्धी पाम्युं हतुं. चांपानेर मां बेजु बावरा नामे पुरुष जे ज्ञातिए नागर हतो अने जेनुं नाम बैजनाथ हतुं ते संगीतनो एक प्रख्यात नायक थइ गयो छे. नागरोमां गायननो शोख विशेष हतो, तेनी केटलीक छाया हजी पण जोवामां आवे छे. ते काळे उंच ज्ञातिओमां स्त्री पुरुषो संगीत शास्त्रनो अभ्यास करतां, अने ते अभ्यास मानवंता गणातो. परंतु मध्यकाळमां केटलाक कारणथी बीजी विद्याओनी माफक ए विद्या पण पडी भागी, अने हाल तो लोको तेनी तरफ जाणे तिरस्कारथी जोता होय एवुं थइ गयुं छे. कोइ गायन शीखतुं होय तो लोक तेनी मजाक करे ए स्थिती स्त्रीओने तो वर्ज्य थइ पडी छे.

परंतु गायन विद्या आवी स्थितिने पहोंचवाथी आपणा देशने नुकसान थयुं छे. गायनना आनंदथी आपणे बेनसीब रहीए छीए. आपणा घर संसार तरफ नजर करीए तो तेमां बे घडी आनंद पमाडे एवी कयी चीज छे? विश्रांतिने वखते पण पुरुषो घरमां रहेता नथी, तेनुं कारण घरनी उदास अवस्था मुख्यत्वे करीने होय छे. गायननी गेरहाजरीमां लोको कविता पसंद करे छे. तेने मरजीमां आवे तेवा रागडा खेंची गाय छे, अने पोतानुं मन रीझवे छे. सामळ कविए एक ठेकाणे कह्युं छे के "राग छत्रीशे आलपे, पाडा रागे गाय! पोतानुं मन रीझवे, तेमां सामानुं शुं जाय!" आवी हालतने पहोंच्या छतां पण लोको कवितापर केटलो मोह राखे छे? गरबाओ, पदो, धोळ, अने आखां आख्याननां आख्यान तेओ गोखी नाखे छे, अने तेना बेसतां उठतां, काम धंधो करतां अने सारे नरसे प्रसंगे बोहोळो उपयोग करे छे

स्त्रीना कंठमां ईश्वरे मधूरता मुकी छे, माटे ते पुरुष करतां पण गायनने स्वभाविक रीते वधारे योग्य छे. एटला माटेज गायन ए आपणा देशमां पूर्वे स्त्रीओनुं एक भूषण गणातुं; अने पाश्चिमात्य देशोमां तो हालपण ते तेमनुं एक भूषण गणाय छे. त्यां नानपणथीज छोकरीओने गायननी तालीम अपाय छे. गुजराती स्त्रीओमां गानानो प्रचार विशेष छे. नवरात्रीमां तेओ पोतानी कुशळता जाहेरमां मुके छे; तथा लग्नादि प्रसंगे तेओ अनेक तरेहनुं गाणुं गाय छे. तेमना मधुर स्वर सांभळवा लोकोनां टोळे टोळां भटकतां आपणे जोइए छीए. सरस गाई जाणनारनां लोकमां वखाण थाय छे.

वास्तविकपणे स्त्रीओनुं आवी जातनुं गाणुं ए संगीत शास्त्रना परीक्षणनुं प्रदर्शन कही शकाय. एमां तालमात्रादिनुं ज्ञान उमेराय अने खरा ताल सुरनुं उमेरण थाय तो ते गायन थइ रहे. आवी जातनी सुधारणा करवामां सौ एकमत्त थया वगर रहेशे नहीं एम अमो मानीए छीए. गायन विद्यानो जीर्णोद्धार करवानुं आ पेहेलुं अने क्रमिक पगथीउं छे.

विद्याविलासी श्रीमंत सरकार महाराजा सयाजीराव गायकवाड सेनाखासखेल समशेरबहादूरनी इच्छानुसार प्रथम तळ वडोदरामां अजमाश दाखल एक छोकराओ माटे गायनशाळा स्थापवामां आवी. ते फत्तेहमंद निवडवाथी तथा युरोपना प्रवास समये सुधरेला देशोमां आ विद्यानो बोहोळो फेलाव श्रीमंत सरकारना जोवामां आववाथी तेने विशेष उत्तेजन आपवानी तेमनी इच्छा थई. नोटेशन पद्धति उपर संगीत शास्त्रनां चार पुस्तको तैयार करावी सरकार खरचे छपाववामां आव्यां. पाटणमां एक बीजी गायनशाळा छोकराओने माटे स्थापवामां आवी. अने छोकरीओने एवो लाभ आपवामाटे वडोदरानी मराठी कन्याशाळा नं. १ तथा गुजराती कन्याशाळा नं. १ मां गायनवर्ग उघाडया.

कन्याओने गायन शीखवानी शरुआत बहु संभाळथी करावानी हती; केमके जो लोकोने ते पसंद न आवे, तो धारेली इच्छा बर आवे नहीं. छंद गरबीओ वगेरे जेनो उपयोग कन्याओ निशाळमां करे छे ते ताल सुर प्रमाणे शीखे, ए रीते शरुआत करी; अने बाळाओनी इच्छा होय ने तेमनां माबाप कबुल होय तेमनेज गायन वर्गमां दाखल करवामां आवी ताल सुर प्रमाणे गावामां संगीतनां ज्ञानची जरूर पडे छे, अने नोटेशन पद्धति वगर तेनो ज्यारे जोइए त्यारे अने जेवो जोइए तेवो उपयोग थइ शकतो नथी; माटे ए पद्धति उपर आ पुस्तक कन्याओने शीखववाना साधन तरीके तैयार करवामां आव्युं छे.

आ पुस्तकमां छंदो मात्र लीधा छे. छंदोनी रचना छंद शास्त्रने अनुसरती होवाथी तेनुं माप एक सरखुं अने तालबंद रहे छे. गरबा गरबीओनी रचना भिन्न छे, तेमां माप तालना वखते नियम पण जळवायला नथी होता, वळी तेमां लखाएली कविता घणीवार शाळोपयोगी होती नथी; माटे प्रथमना यत्नमां ए प्रकार दाखल कर्यो नथी. तो पण हवे पछी तेनुं संशोधन करी एक पुस्तक तैयार करवामां आवशे. प्रेमानंद आदि कविओए लखेलां आख्यान लोकोने बहु प्रीय छे. एमांना राग, गरबा, गरबीओ अने छंदोथी जूदा पडे छे. एमने नोटेशनमां उतारवानो यत्न चाले छे. प्रेमानंद कृत नृसिंह मेहेतानुं मामेरुं नोटेशन पद्धति ए तैयार थाय छे ते थोडी मुदते बहार पडशे.

आ ग्रंथमां समाएला छंदोनां उदाहरण बोधरुप उत्तम कवियोनां पसंद कर्‍यां छे.

श्रीमंत सरकार महाराजा सयाजीरावे कृपावंत थई आ पुस्तक पण सरकार खरचे छपावी आप्युं छे.

मौलाबक्ष घीसेखान,
ग्रंथकार.

चेतवणी.

आ पुस्तकमां केटलाक ठिकाणे एकज राग, ताल, सुरमां एकथी वधारे आवेला छंदोने जुदा जुदा नोटेशन नहीं आपता तेज नोटेशनना हेठळ क्रमवार आंकडा नाखी छंदो दाखल कर्या छे. माटे एवा छंदो गावानी वखते आंकडाना क्रम तरफ अवश्य लक्ष्य अपवो.

तेमज केटलाक छंदोमां पेहेलुं तथा तिजुं चरण एकज ताल सुरमांनो अने बिजूं तथा चोथुं चरण बिजा ताल सुरमांनुं आवेलुं ते ठेकाणे पेहेलूं तथा तिजुं चरण एकज नोटेशन हेठळ लई त्रिजुं तथा चोथुं चरण बिजा नोटेशन हेठळ लिधूं छे. अने तेने १–३ तथा २–४ एवा अनुक्रमना आंकडा आपेला छे.

केटलाक ठेकाणे एकज प्रकारना त्रण चार छंदो आवेला छे. ते ठेकाणे पेहेला नोटेशन हेठळ प्रत्येक छंदनुं पेहेलुं चरण लेई तेने १, १, १, ए प्रमाणें आंकडा आपेला छे. बीजा नोटेशनमां प्रत्येक छंदनुं बिजुं चरण, त्रिजा नोटेशननां त्रिजुं चरण अने चोथा नोटेशनमां प्रत्येक छंदनुं चोथुं चरण लई तेने २, २, २; ३, ३, ३; अने ४, ४, ४; एवा आंकडा आप्या छे; ते ठेकाणें पेहेला आंकडा पछी बिजो, त्रिजो अने चोथो एवा अनुक्रमथी छंद गावा. एकज नोटेशन फरी फरी आवी ग्रंथनो विस्तार नहीं थवो माटे आवी व्यवस्था करवी पडी छे. फक्त एवा ठेकाणे वाचनारोए उपरनी सूचना तरफ लक्ष आपी वाचवूं एटले कईपण अडचण आवनार नथी.

ग्रंथकर्ता.

अनुक्रमणिका.



उपोद्घात.

१ गायनमां मुख्य स्वर सात छे. तेना नाम विषे नीचेप्रमाणे.

अनुक्रम.	संज्ञास्वर.	संस्कृत नाम.
१	स	षड्ज
२	री	ऋषभ
३	ग	गांधार
४	म	मध्यम
५	प	पंचम
६	ध	धैवत
७	नी	निषाद

उपर पैकी पांच स्वरना भेद थाय छे. ते भेद बे जातना छे. कोमळ अने तीव्र. ऋषभ, गांधार, धैवत अने निषाद, ए चार स्वर कोमळ थाय छे. अने मध्यम तीव्र थाय छे. ने षड्ज तथा पंचम, कायम रहे छे. ए प्रमाणे चार कोमळ, एक तीव्र अने सात शुद्ध, मळी कुल बार स्वर थाय छे.

२ स्वरना कोमळ तथा तीव्र वगैरे चिन्होविषे.

सº आ चिन्हवाळा अक्षर (स्वर) पूर्ण अथवा शुद्ध छे एम समजवुं.

रीॱ आ चिन्हवाळा अक्षर (स्वर) कोमळ छे एम समजवुं.

म/ आवा चिन्हवाळा अक्षर (स्वर) तीव्र छे एम समजवुं.

३ सप्तक तथा तेना चिन्होविषे.

पाछळ बतावेला सातस्वरना समुदायने सप्तक कहे छे. सप्तकना प्रकार त्रण छे. तेना नाम (१) मंद्र, (२) मध्य, अने (३) तार.

---

१ जे कविताना स्वर उपर कांइ पण चिन्ह करेलां न होय ते बधा स्वर शुद्ध अथवा पूर्ण समजवा, तथा कोइ रागमां कोइ कोइ वखत कोमळ तथा शुद्ध स्वर आवे छे त्यारे शुद्ध स्वरनुं चिन्ह लगाववु पडे छे.

प̱ आवा चिन्हवाळो अक्षर (स्वर) मंद्र सप्तकनो छे एम समजवुं.

स आ अक्षर (स्वर) मध्य सप्तकनो छे एम समजवुं.

म̄ आ उपर आडी लीटीवाळो अक्षर (स्वर) तार सप्तकनो छे एम समजवुं.

ए प्रमाणे आ पुस्तकमां मंद्र सप्तकना पंचमथी निषाद सुधी, तथा मध्य सप्तकना षड्जथी निषाद सुधी अने तार सप्तकना षड्जथी मध्यम सुधी मळी कुल त्रे सप्तकथी रचना करेली छे.

४ ताल तथा तेना चिन्हो विषे.

गायनमां मुख्य ताल सात छे. अने ते प्रस्तार भेदवडे करीने अनेक प्रकारना थाय छे. अनेक तालमां गावानी कविताओ कलावंत वगेरे लोके गाइ शके छे. पण आ पुस्तकमां तेवा तालनो संबंध नही राखतां मुख्य कुदरती नियम प्रमाणे आदीताल (एक ताल) राख्या छे. तेनी मुख्य जाती पांच छे. तेनां नाम तथा मात्रा अने चिन्हो (स्वरूप) नीचे प्रमाणे.

अनुक्रम	मात्रासंख्या.	चिन्ह (स्वरूप)	जाती
१	४	|	चतुस्त्र
२	३	◡०	तिस्त्र.
३	७	◡०|	मिस्त्र.
४	५	◡|	खंड.
५	९	◡ऽ	संकीर्ण.

ˉ आवुं चिन्ह जे अक्षर तथा स्वर नीचे कर्युं होय त्यां ताल देवो एम समजवुं.

ˏ आवुं चिन्ह जे अक्षर तथा स्वर नीचे कर्युं होय त्यां ताल न आपतां जमीन तरफ हाथ करवो. एने खालीनुं चिन्ह समजवुं.

---

१ उपर बतावेली जातीशिवाय एक उपजाती छे, तेने दिव्यसंकीर्ण जाती कहे छे. तेनुं स्वरूप (०\|) आ छे अने तेनी मात्रा ८ होय छे.

५ काळविषे.

काळ एटले स्वरोनी गती. काळ त्रण प्रकारना छे अने तेनें विलंब, मध्य ने द्रुत कहे छे. एक तालमां आठ लघुमात्रा आवे तो तेने विलंबकाळ समजवो. ने चार आवे तो तेने मध्य, अने बे आवे तो तेने द्रुतकाळ समजवो.

६ यतीना नाम तथा तेना चिन्होविषे.

यतीनां मुख्य प्रकार पांच छे. (१) समयति, (२) विषमयति, (३) गोपुच्छ यति, (४) मृदंगयति अने (५) द्रुतयति.

स | री आ समयति छे. एमा पहेला स्वरपर ताल आवे अने बीजा कोइ स्वरनो उच्चार थाय त्यां सुधी तेने खेंचवो, तेने समयति कहे छे. समयति ए मात्र बेज स्वरोनी मिलावट होय छे. तेमां प्रथमना स्वरनुं पूर्ण उच्चारण अने तेनी साथे बीजा स्वरना प्रथमना आकारनुं मात्रा उच्चारण जोडीने करवुं. तेने पण समयति कहे छे.

जेम के—स | आ

स | री आ विषमयति छे. एमां बे स्वरो वच्चे उभी लिटी होय, त्यां प्रथम स्वरनो उच्चार करवो, अने बीजा स्वरउपर ताल आपवो; एटले विषमयति थाय छे.

जेम के:—स | आ

स री ग आ गोपुच्छयति छे. त्रण चार अथवा तेना करतां वधारे स्वरो मळीने थाय छे. जेम के:—

सरीगम सरीगमपधनीसं

आ. आ.

स ग म आ मृदंगयति[1] छे. ए त्रण, चार अथवा वधारे स्वरो मळीनें थाय छे. मृदंगयतीमां प्रथम स्वरोनों उच्चार

---

१ मृदंगयतीनो अरधो भाग तेने अर्ध मृदंगयति कहे छे. जेम के:—

साधारण करीने उत्तरोत्तर पोहोळो आवाज करतां जवो. ते जेटला स्वरो सुधी मृदंगयतीनो प्रथमनो भाग होय त्यांसुधी अनुक्रमे पोहोळो करी अने उत्तरार्धनो प्रथम प्रमाणे साधारण उच्चार करवो. जेमकेः—



स आ अ



सरीगमप आ प्लुतयति छे. जे स्वरो अथवा वर्ण उपर प्लुतयतीनुं चिन्ह राख्युं होय, ते स्वरमाना अथवा वर्णमाना आदिस्वरनुं अथवा वर्णनोउच्चार करी ते पछीनानो उच्चार 'अ' 'आ' उपर खटको अथवा झोको देवो. आ यति घणुं करीने मंद्र अने मध्य सप्तकना स्वरोमां थाय छे. जेम केः—



सरीगमपधनीसं
आ

७ स्वरोनी मात्रा तथा तेना चिन्होविषे.

सा आवा चिन्हवाळा अक्षर ने (स्वर) द्वयगुरु समजवुं. अने एनी मात्रा चार गणतां सुधी स्वर लंबाववो.

री. आवा चिन्हवाळा अक्षर ने (स्वर) डोडगुरु समजवो. अने एनी त्रण मात्रा गणतां सुधी स्वर लंबाववो.

गा आवा चिन्हवाळा अक्षर ने (स्वर) गुरु समजवो. अने एनी मात्रा बे गणतां सुधी स्वर लंबाववो.

। आवा चिन्हने लघु समजवुं. एनी मात्रा एक गणवी.

---

१ लघुथी ते द्वयगुरु सुधीना चिन्ह, कविता उपर जे स्वरो लखेलां छे, तेमां कोइपण ठेकाणे लखेलां होय तो त्यां जेवां चिन्ह होय ते प्रमाणे थोभवुं जोइये. जमकेः—स, । री, ग, आमां 'स' नो उच्चार कर्या पछी एक लघु अक्षरने जेटलो वखत लागे छे तेटलुं थोभीने पछी, री, ग, नो उच्चार करवो. एज प्रमाणे द्वयगुरुथी लघु सुधी समजवुं.

स. आवा चिन्हवाळा अक्षर ने (स्वर) दोडलघु समजवुं. एनी दोड मात्रा गणता सुधी स्वर लंबाववो.

ग॒ आवा चिन्हवाळा अक्षरने (स्वर) द्रुत समजवो. एनो अर्ध मात्रा सुधी स्वर लंबाववो.

𝄋 गायनमां आ मुख्य चिन्ह छे. अने ते दरेक लीटीनी पहेलां आवे छे. एवडे स्वरनो आरंभ मध्य सप्तकथी करवो एम समजवुं.

स |रीगम | आ जे 'स' अने. 'रीगम' नी वच्चे अने आखरे जे उभी लीटी छे तेने तालस्तंभ कहे छे.

|२ आ चिन्हनी डाबी बाजुए जेटला स्वरो तथा अक्षरो होय ते बे वार गावा.

आवुं चिन्ह आवे त्यां शरुआतथी आ चिन्ह सुधी बेवार गावुं. अने एने जमणीबाजुनां स्वर पण बेवार गावा.

आवुं चिन्ह आवे त्यां स्वरनी तथा कवितानी पूर्णता थई एम समजवुं.

* आवुं चिन्ह ज्यां पेहेलुं होय अने पछी ए चिन्ह आवे तो शरुआतथी बीजा चिन्ह सुधी गाइ पछी एकदम पेहेलां चिन्हथी गावुं. जेमके:—
सरी*गम | रीगमप | गमप*ध | आमां पेहेलेथी ग, म, प, ध, सुधी गावुं. पछी एकदम री, ग, म, प, थी आरंभ करवो.

बालासंगीतमाला.

पाठ १.

उक्ताछंद.

राग शंकराभरण ता. च. जा. एक ताल मात्रा ४ मध्यकाल.

४	सा ४	री ४	गा ४	मा ४	पा ४	धा ४	नी ४	सां ४
।	कौं	छौ	नी	तीं	के	गी	री	ती

सां ४	नी ४	धा ४	पा ४	मा ४	गा ४	री ४	सा ४
सौ	ने	मी	तीं	रे	ते	स्थी	ती

पाठ २.

विद्युन्मालाछंद.

राग शंकराभरण ताल च. जा. एक ताल मात्रा ४ मध्यकाल.

४	सा री	गा मा	पा धा	नी सां
।	लो को	रा जी	रे त	बो ली
	सां नी	धा पा	मा गा	री सा
	सौ आ	नं दी	रे ते	खो ली
	सा री	गा मा	पा धा	नी सां
	कृ पा	यो ने	यो जे	भा ई
	सां नी	धा पा	मा गा	री सा
	जे थी	सं प	त्ती ले	मा ई

पाठ ३.

भुजंगीछंद.

राग शंकराभरण ताल खं. जा. एकताल मात्रा ५ मध्यकाल.

५ स	री गा म	पा धा नि	सां नी ध	पा मा	ग	मा धा प	
क	री ने क	रू णा उ	गा रो ज	स्वा मी	स	दा हूं व	

मा गा रि	पा मा ग	री सा	ग	मा धा नि	सं री ग	
दू छू अ	ती ख द	पा मी	कृ	पा जो क	रो तो श	

सां नी ध	पा मा	ग	मा धा प	मा गा रि	पा मा ग	री सा	
कृ पा प	बा मी	न	मा मी न	मा मी न	मा मी न	मा मी	

पाठ ४.

भुजंगीछंद.

राग शंकराभरण ता. खंड जा. एक ताल मात्रा ५ मध्यकाल.

५ स	स रि गा म	प ध नी स	स नि धा प	प म ग रि	
न	थी आ श	वि श्वा स	छे ये क	ता रो	
न	थी मू ख	स्वा मी तु	औ चौ द	लो के	

म	ग रि सा नि	री सा रि	ग म पा ध	प म ग रि	
कृ	पा द्रि ष्टि	ये मु क्ति	आ रे उ	ता रो	
स	उ दे व	ता रे य	दे. तो वि	लो के	

म	ग म प नि ध	नी सा स	ध नि स ग री	स नि ध प	
ज	नो ज न्म	ने मृ त्यु	नो मा र	खा ता	
क	री भ क्ति	ने श र्ण	ता रे मु	हा ता	

ग	गा री स	री सा नि	सा नि ध	प म ग स	
न	मो जी व	त्रा ता दि	यो शां ति	दा ता	
न	मो जी व	,, ,, ,,	,, ,, ,,	,, ,,	

पाठ ५

भुजंगप्रयातवृत्त.

राग बिभास, ताल खंडजाती एक ताल मात्रा ५ मध्यकाल

५	प	सा सा ध	धा पा ग	गा री ग	री सा	
१	सु	णो बा इ	सि क्षा क	हूं तं म	का जे	
२	रु	डी बा ळ	की मं न	सा थे ति	चा रो	
३	क	हे सा स	रा मा तु	ने बा इ	शा णी	
४	शि	खो भ र्त	भ र्वा त	णूं बा इ	हा थे	

	ध	सा सा रि	गा पा ग	गा री ग	ग रि सा	
१	भ	णो भा व	थी तो ब	धूं दुः ख	भा जे	
२	उ	डी द्र ष्ट	ने अं त	रे मां उ	ता रो	
३	भ	णे थी व	धे मू ख	मां शू भ	वा णी	
४	म	ळी ने ह	ळी ने स	जो स र्व	सा थे	

	ग	गा पा ध	सां रीं रिं	गां गां रिं	गं रिं सां
१	नि	शा दी न	वि द्या त	णो स्वा द	घा खो
२	शि	खो शू द्ध	वि द्या म	लूं सू ख	मा खो
३	दि	ले आ प	णे थी व	धे गू ण	दा खो
४	ह	वे तो भ	णी ने ग	णी ला डि	ली खो

	प	सां सां ध	धा पा ग	गा री ग	ग रि सा
१	नि	शा ळे ज	वा नो त	मे नी म	रा खो
२	नि	,, ,, ,,	,, ,, ,,	,, ,, ,,	,, ,,
३	,,	,, ,, ,,	,, ,, ,,	,, ,, ,,	,, ,,
४	,,	,, ,, ,,	,, ,, ,,	,, ,, ,,	,, ,,

पाठ ६

ललितछंद.

रा. शोकवराळी, ताल चतुश्रजाती एक ताल मात्रा ४ मध्यकाल.

२ प प नि ध	ध म पा	गा रि ग	ग रि सा
४ न मुं न मुं	म हा	रा ज ने	न मूं
हृ द य मा	रु द्धुं	ध्या न हु	ध रूं

स स रि ग	ग म पा	गा रि ग	ग रि सा
प र म भ	क्ति ना	रं ग मा	र मुं
प्र भु उ पा	स ना	प्रे म थी	क रूं

𝄞 स स रि नि | नि ध पा | गा रि ग | ग रि सा |
१ न व वि जो | प्र भू | जा णु हुं | वि धी | २
२ स क ळ शां | ति ना | छो म हो | द धी |

𝄞 स स रि ग | ग म पा | गा रि ग | ग रि सा ||
१ श र ण रा | ख शो | रे द या | नि धी
२ श र ण रा | ख शो | रे द या | नि धी ||

पाठ ७.

तोटक छंद.

रा० भैरवी, ताल चतुश्रजाती एक ताल (कव्वाली) मात्रा ४ मध्यकाल.

𝄞 ४ ध नि | सा रि ग | री स नि | गा रि रि |
१ प र | ब्र ह्म प | रा त्प र | वि श्व प |
२ प्र भु | ता प्र भु | ता रि दि | से स घ |

𝄞 गा म प | ग म प म ग रि | स रि ग म |
१ ती न मि | ने त म | ने क रुं |
२ के तु ज | पा र पु | रो अ म |

𝄞 स रि ग म ग रि | सा | स स | धा ध प | धा प प |
१ छूं वि न | ती | प्र भु | ठ्य छि स | म छि वि |
२ ने न म | के | प्र ग | त्या प रि | पू र्ण प्र |

प् धृ॰ नि॰ धृ॰ ध॰ प् म्	मा म प	ग्॰ म् प् म् ग॰ रि	
१ पे वि च	रो क रु	णा नि धि	
२ ता प ख	रो क रु	णा ,, ,,	

स रि ग॰ म	स् रि ग्॰ म् ग॰ रि॰	सा	
१ क ष्ट स	म स्त ह	रो	
२ ,, ,, ,,	,, ,, ,,	,,	

पाठ ८

नर्मदाष्टक छंदनाराच श्लोक १-२.

रा. भैरवी, ताल द्विव्यसंकीर्णजाती एक ताल मात्रा ६ मध्यकाल.

६/० स	धा॰ प धा॰ प	म प म ग॰ रि ग॰	री॰ नि॰ सा म
१ स	बिं दु सिं धु	सु स्ख ल त्त	रं ग भं ग
२ त्व	दं बु ली न	दी न मी न	दि व्य सं प्र

री॰ नि॰ सा	स	री॰ नि॰ सा रि॰	गा॰ ग॰ मा म
१ रं जि तं	द्वि	ष त्सु पा प	जा त जा त
२ दा य कं	क	लौ म लौ घ	भा र हा रि

गा॰ ग॰ मा म	मा रि॰ सा	म	धा॰ म धा॰ नि॰
१ का रि वा रि	सं यु तं	कृ	तां त दू त
२ स र्व ती र्थ	ना य कं	सु	म च्छ क च्छ

	साऽ निᵛ साऽ स	नीऽᵛ निᵛ साऽ स	रीऽᵛ स धाऽᵛ	
१	का ल भू त	भी ति हा रि	व र्मं दे	
२	न क्र च क्र	च क्र वा क	श र्म दे	न
	‒ ७	‒ ७	‒ ७	

	सं	धाऽᵛ प धाऽᵛ प	पाऽ म गᵛ रि गᵛ	रीऽᵛ निᵛ साऽ म
१	त्व	दी य पा द	पं क जं न	मा मि दे वि
२	,,	,, ,, ,, ,,	,, ,, ,, ,,	,, ,, ,, ,,
		‒ ७	‒ ७	‒ ७

	रीऽᵛ निᵛ साऽ	
१	न र्म दे	
२	,, ,, ,,	
	‒ ७	

पाठ ९

नर्मदाष्टक श्लोक ३-४.

रा० जोगी असावरी, ताल दिव्यसंकीर्णजाती एक ताल मात्रा ९ म. का.

९/०	स	रीऽᵛ म पाऽ धᵛ	साऽ नि धाऽᵛ प	माऽ प धाऽᵛ प
३	म	हा ग भी र	नी र पू र	पा प धू त
४	ग	तं त दै व	मे भ यं त्व	दं बु वि क्षि
		‒ ७	‒ ७	‒ ७

	म् प् धूᵛ प् म ग रिᵛ		ग	रीऽᵛ स धाऽᵛ स	साऽ स रीऽᵛ म
३	भू त लं	न	ध्व	न त्स म स्त	पा त का रि
४	तं य दा		मृ	कं ड सू नु	शौ न का सु
	‒ ७			‒ ७	‒ ७

पा ध मा प | प्‌ म्‌ प्‌ ध्‌ प्‌ म्‌ म्‌ प्‌ म्‌ ग्‌ | म
३ दा रि ता प | दा च ल मू | ज
४ रा रि से वि | स र्व दा | पु

पा ध सा रिं | मा ग रीं स | सा नि सा रिं
३ ग ह्व ये म | हा भ ये मृ | कं ड सू नु
४ न र्भे वा ब्धि | ज न्म जं भ | वा ब्धि दुः ख

स्‌ नि्‌ स्‌ रि्‌ स्‌ नि्‌ ध्‌ प्‌ म्‌ ग्‌ | सा | रीं म पा ध
३ ह र्म दे | त्व | दी य पा द
४ ब र्मे दे | ,, | ,, ,, ,, ,,

सा नि धा प | मा प धा प | म्‌ प्‌ ध्‌ प्‌ म ग रि
३ पं क जं न | मा मि दे वि | न र्म दे
४ ,, ,, ,, ,, | ,, ,, ,, ,, | ,, ,, ,,

पाठ १०

नर्मदाष्टक श्लोक ५–६.

रा. ललित, ताल दिव्यसंकीर्णजाती एकताल मात्रा ६ मध्यकाल.

६/० स | रीं स मा ग | मा म मा ग | मा ध नी सं
५ अ | ल क्ष ल क्ष | कि न्न रा न | रा सु रा रि
६ स | न त्कु मा र | ना चि के त | क श्य पा त्रि

निधऽ म ग रिऽ | स | गा म ग रिऽ स | नी स धऽ नि स |
१ पू जिं तं ॥ सु | ल क्ष नी र | ती र धी र |
६ ष ट् प दै | धृ | तं स्व की य | मा न से षु |

गा म धऽ नि स | स नि स रीऽ स नि धऽ म ग रिऽ |
१ प क्षि ल क्षि | कू जि त म् ॥
६ ना र दा दि | प ट् प दैः |

ग | मा धऽ नी स | नी रिऽ स नि स | गा म ग रिऽ स |
१ व | री ष्ट शि ष्ठ | पि प्प ला दि | क र्द मा दि |
६ र | वीं दु रं ति | दे व दे व | रा ज क र्म |

नि रिऽ स नि धऽ म ग म ग रीऽ | स | रीऽ स मा ग |
१ श र्म दे ॥ त्व | दी य पा द |
६ श र्म दे | ,, | ,, ,, ,, ,, |

मा म मा ग | मा धऽ नी स | नि धऽ म ग रिऽ ||
१ पं क जं न | मा मि दे वि | न र्म दे
६ ,, ,, ,, ,, | ,, ,, ,, ,, | ,, ,, ,, ||

पाठ ११:

नर्मदाष्टक श्लोक ७–८–९.

रा. बिलावल, ताल तिश्रजाती एक ताल मात्रा ३ मध्यकाल.

	३ स	रीं ग पां ध	सां नि धां प	धां नि धां प	ध प म ग रि
७	अ	ल क्ष ल क्ष	ल क्ष पा प	ल क्ष सा र	सा यु धं
८	अ	हो मृ तं स्व	नं श्रु त मू	हे श कें श	जा त टे
९	इ	दं तु न र्म	दा ष्ट कं त्रि	का ल मे व	ये स दा
		− 7	− 7	− 7	− 7

	ग	रीं स स नि ध	सां रिं गां प	धां रिं सं नि ध
७	त	त स्तु जी व	जं तु तं तु	भ क्ति मु क्ति
८	कि	रा त सू त	बा ड वे षु	पं डि ते श
९	प	ठं ति ते नि	रं त रं न	यां ति दु र्ग
		− 7	− 7	− 7

	ध प म ग रि	ग	पां प नि ध नि	सां नि रीं सं
७	दा य क म्	वि	रं चि वि ष्णु	शं क र स्व
८	ठे न टे	दु	रं ति पा प	ता प हा रि
९	तीं क दा	सु	ल भ्य दे ह	दु र्ल भं म
	− 7		− 7	− 7

	धां नि सं ग रि	सं नि ध प म	ग	गां रिं सं नि ध
७	की य धा म	व र्म दे	त्व	दी य पा द
८	म र्व जं तु	श र्म दे	,,	,, ,, ,, ,,
९	हे श धा म	गौ र वं	पु	न र्भ वा न
	− 7	− 7		− 7

रीं सं निॅध प | नीॅ ध प म ग | ध प म ग रि ||

७ पं क जं न | मा मि दे वि | न मं दे ||

८ ,, ,, ,, ,, | ,, ,, ,, ,, | ,, ,, ,, ||

९ रा न वै वि | लो क यं ति | रौ र व म् ||

पाठ १२

पृथ्वीछंद

रा. आनंदभैरवी. ता. च. जा. एकताल विलंबकाल मात्रा ८

८ प सां रीं सां निॅ धी | प निॅ ध प गॅ मा |

क रे क र म जे | कु डा फ ळ न ले |

म पा ध म गॅ मा | रि गाॅ रि गॅ म पा |

रु डां छे उं डा | र हे हृ द य गां |

ध पा म गॅ गॅ मा | प गाॅ रि रि गॅ सा |

मुं डां शि र क रे | मुं डा ना हुं डा |

प सां रिं सं निॅ धा | प निॅ ध प गॅ मा | म पा ध म गॅ मा |

अ हे स र व तू | म डां दु ख त णां | थ डां थै ख डां |

रि गाॅ रि गॅ म पा | ध पा म गॅ गॅ मा | म पा ध म गॅ मा ||

नृ सिं ठेहु भ मि गा | म डां भु ख थि घा | प डा थैं म डा ||

पाठ १३

ललितछंद

राग गौडमल्हार (आरभी) ता. च. जा. ए. ता. म. का. मा. ४.

४ ध ध प म	प ध सा	सं रिं सं निं धं पं म	म ग री
१ ज ग त ना	ध रे	न प्र थै	अ मे ॥
२ वि ष य भो	ग मां	रा खि छे	र ती

रि रि रि प	प ध प	म ग रि प	म ग री
१ वि न य भा	व थी	वं दि ये	त ने ॥
२ न व क दी	अ मे	म क्ति तो	कि धी

म प ध सं	री री री	मं गं री सं	नि ध प
१ श्र व ण आ	क रो	स्व रूप प्रा	र्थ ना ॥
२ श र ण आ	वि ने	मा गि ये	क्ष मा

ध रि स नि	ध प म प	सं नि ध प	म ग रि स
प्र भु कृ पा	नि धे	रे द या	घ ना
,, ,, ,, ,,	,, ,,	,, ,, ,,	,, ,,

पाठ १४

पृथ्वीछंद

रागीणी कामोदी ता. च. जा. ए. ताल विलंबकाल मात्रा ४.

८ ध सा रि गं मं रिं गं सा	ध री स रिं सं निं धं पं मं गं मं
व हे न र घ णा	ध रा नि व ड्डि पा

× मध्यमश्रुती (मध्यम थाट करीने) आरंभ करवो.

सनी पधसरी । सगा मरिमि गरिसा । निनी पधसरी
धराना सरा । रहेअधि क आ । करा विरमिना

री गा ग रि ग रि सनि धप । धसा रिगम रिग सा
नथाथै खरा । प्रहीत्हद य मां

धरी स रि सनि ध प म ग म । सनी पधसरी
छरा च हि श पा । म रा आ स रा

स गा म रि म ग रि सा । नि नी प ध स री
नृ सिं ह स च रा । च रा प्र हि श ना

रि गा ग रि ग रि स नि ध प
न रा आ प रा

पाठ १५

ललितछंद

रागिणी पहाडी ता. च. जा. एकताल मध्यका. मात्रा १६

४ स स नि नि । प ध सा । नी ध ध प । म ग रि ग रि स
स क ळ श । क्ति छे । ता ह री । प्र भू

ग ग प ध	ध रिं सां	नीं धं धं पं	मं गं रिं गं रिं स
क दि कळी	श का	ती न थी	वि भू
० ३	० ३	० ३	० ३

प प ध स	सं रिं गं मं रिं गं	सां निं ध	प ध सां
स क ळ क	र्म ना	मा क्षि चि	द् घ ना
० ३	० ३	० ३	० ३

स स नि नि	प ध सां	नीं ध धं पं	मं गं रिं गं रिं स
प्र भु कृ पा	नि धे	रे द या	घ ना
० ३	० ३	० ३	० ३

पाठ १६

भुजंग प्रयात छंद

राग खमाज ता. लं. जा. एक ताल मात्रा ९ मध्यकाल.

	स	सां गां ग	मां पां ध	सं निं धां म	प ध म ग
१ { १	प	र ब्र ह्म	वि श्वे श	व्या पी प	रे श
३	क	ळा ती न	थी श क्ति	ता री अ	गा ध
२ { १	त	मा रा थ	की सृ ष्टि	वि स्ता र	पा मी
३	ज	ग तं त्र	म वै त	मा रे ज	हा थ
		०	३	०	३

	निं	नीं नीं नि	सां पां ध	सं निं धां म	प ध म ग
१ { २	प	रा त्मा प्र	भु स र्व	सा क्षी म	हे श
४	अ	मे दं ड	वत वं दि	ये वि श्व	ना थ
२ { २	त	मे पू र्ण	रू पे र	ह्या छो वि	रा मी
४	अ	मे दं ड	वत वं दि	ये वि श्व	ना थ
	०	०	३	०	३

पाठ १७

तोटकछंद

राग पहाडी ताल च. जा. एक ताल मात्रा ४ मध्यकाल.

	४ स स	रिऽ म म	पऽ ध प	पऽ ध रि	साऽ रि सा नि ध
१	भु मि	मं ड ल	सुं द र	शो भि र	ह्यू तु ज
२	ग ग	ने म्र ह	रा ज वि	रा जि र	हे प्र भु

	पऽ म ग	साऽ ग म प	साऽ स रि ग	साऽ
१	श क्ति थ	की भ र	पू र भ	भुं
२	नी प्र भु	ता नु म	मा ण क	हे

	म म	पऽ ध नि	पऽ ध रि	साऽ रि ग	साऽ स रि
३	प्र भु	ना थ त	मे भ व	ता प ह	रो क रु
४	स च	रा च र	सृ ष्टि वि	षे प स	रो ,, ,,

	रि स नि ध प	ध प म ग स	ग म प ग स रि ग रि	साऽ
३	णा नि धि	क ष्ट स	म स्त ह	रो
४	,, ,, ,,	,, ,, ,,	,, ,, ,,	,,

पाठ १८

चारुचामरगीतिकाछंद

रा० देस, ता० मिश्रजाती एक ताल मध्यकाल मात्रा ७

७ स स | री रि मा प प | सा नि सा रि निᵛ |
१ क र | ता र श्री क रि | ने कृ पा शु भ |
२ र च | ना र छो र च | ना रु डीं व ळि |

धा म पा स निᵛ | धा म गा | म म | पा·प नी नि नि |
१ बु द्धि शा र द | आ प जो ने | ज प. | जा प में न थि |
२ छे रु डी कृ ति | आ प नी | ग ण | ना र शुं ग ण |

सा सं री निᵛ निᵛ | धा म पा स निᵛ | धा म गा |
१ की ध रे क दि | ह स्त म स्त क | था प जो ने
२ शे ग णी ग णि | स र्व दा ग ति | आ प नि |

प ध | मा प नी नि नि | सा नि सा स स | री म गा स रि |
१ ज ग | ना शु रा स्त्र ज | ना र छो ह रि | आ प वी ण न |
२ अ घ | ना भ व्या पु र | पुं ज तो प ण | दृ ष्टि सी त ल |

नीᵛ ध पा | रि स | नीᵛ ध पा म प | सा नि सा रि निᵛ |
१ आ श रो ने | प्र भु | ना वि ना ब त | ला व शे कु ण |
२ आ द रो | ,, ,, | ,, ,, ,, ,, ,, | ,, ,, ,, ,, ,, |

धा म पा स निᵛ | धा म गा ||
१ शु द्ध मा र ग | पां श रो ||
२ ,, ,, ,, ,, ,, | ,, ,, ,, ||

पाठ १९

विलासिनीछंद

रा० जोगी असावरी, ताल चतुश्रजाती एक ताल मात्रा ४ मध्यकाल.

	४ रिॽ मा॒ म	पा॒ पा॒	प धा॒ॽ म	प धॽ सां॒	सां॒ नी॒ नि
१	श री र	वा णी	मनथी ज	पा पो	म मू कि
२	त मे म	भू स	र्वपिता ज	मा ता	त मे स

	धा॒ॽ पा॒	म पा॒ धॽ	म ग रिॽ स	म पा॒ धॽ	सं सं सां॒
१	धा मे	अगण्या अ	मा पो	क्ष मा क	री ने
२	खा बं	धुत मे ज	धा ता	वि द्या म	ती सद्

	स रिॽ म ग	रीॽ सां॒	रिॽ सां॒ नि	धा॒ॽ पा॒
१	चित् मा स	मा बो	द या क	री ने
२	गति शां ति	दा ता	त मे म	भू मा

	म प नि धॄॽप्	म ग रिॽ स
१	दिन्ने नि	भा वो
२	णिसम स्त	त्रा ता

पाठ २०

विलासिनीछंद

रा. कालंगडा ताल चतुश्रजाती एकताल मात्रा ४ मध्यकाल.

४	स गा म	पा धा	प धा प	नी सं रिं निं सं
१	द या घ	ना दे	व त में ह	मा री
२	म भू त	मा री	तु ल ना न	था य

	ध सां नि	धा पा	म पा ध	म प ग म गा
१	ले शो वि	नं ती	चि त मा वि	क्या री
२	स दा त	मा री	क रु णा ज	गा य

	म पा ध	नी सां	रिं सां रिं	नी सं रिं निं सं
१	ज णा य	ते मां	थकि यो ग्य	सा गी
२	त मे ग	हा गं	गळ भा गि	दा खो

	ध सां नि	धा पा	म पा ध	म प ग म गा
१	कृ पा क	री न	प्रभु ल्यो भ्रि	का री
२	स त्सं ग	ती मा	निश दी न	रा खो

पाठ २१

मालिनीछंद

राग माढ, ताल तिश्रजाती एकताल मात्रा ३ मध्यकाल.

	३/० ऽ नि सं	रि ग ग	म प ऽ	ग म ग	प म ऽ	रि ग रि
१	प्र भुं	प द व	हु मो	टुं वि	श्व नु	आ दि
२	अ ज	र अ म	र पो	तैं छो	चि दा	नं द

	सा रि ग रि	सा ऽ	ऽ प रि	सं नि नि	नि प ध नि	प ऽ
१	का	र्य त	स क	ल स ब	ल ध्या	ध्यं
२	द	वे	ऋ षि	मु नि ज	न स	वें

	ऽ ग म	प ध नि ध	ध प ऽ	ग म ग	प म ऽ
१	वि	श्व	दे	वि	श्व
२	छो	डी	पा	धो	ज

	रि ग रि	सा रि ग री	सा ऽ
१	वा		स्य
२	ग		वें

पाठ २२

चंचलाछंद

रा. परज, ताल दिव्यसंकीर्ण जाती एक ताल मात्रा ६ म. का.

६ सा नि सा रि	नि सं नि ध म प	मा ध सा नि
ज्ञा न ना प	मा य वा त	ना वि चा र

ध प म ग रि स	नी स गा म	ध म ध नी स
मा न जा य	ज्ञा न मा न	धा म ते ज

सं नि सं रि नि सं	ध सं नि ध म प	म ग म प ध प
मा र तो बि	शे ष खा य	सं त प्रे म

म ध नि ध नि सं	गा रि सं नि सं	नि रि सं नि ध नि
पा थ पा त्र	ते स मा न	भो न था य

सा नि सा रीं	नि सं नि ध म प
तो नृ सिं ह	गा य धी क

मा ध सा नि	ध म प ग रि स
सा र ही न	भा फ सा य

पाठ २३

चंपकमालाछंद.

रा० सोरट, ताल च. जा. एक ताल मात्रा ८ विलंबकाल.

ऽ म रि म म पा पा | नि ध नि ध सं नि ध प ||
चा ल पु रा णी | दुः ख दि ये जे ||

री म्म म पा सं नि | ध प ध म ग रि ग म ||
चो क सि ते नी | पं च थि की जे ||

म प नि सं रिं सं नि ध | प ध प म ग रि ग स ||
दू र ध री नै | दं भ ध री जे ||

म रि म म पा पा | नि ध नि ध सं नि ध प ||
लो क त णा पो | ते ज स ली जे ||

पाठ २४

नाराच छंद (पंचचामर.)

रा. पंथवराळी (शुद्ध पूर्या) ताल दिव्यसंकीर्ण जाती एकताल मात्रा ६ मध्यकाल

ऽ ग पा म | गा रि सा रि | रि नि स गा ग |
न हां न | ही न हां क | रे ग मा र |

ग म, ग म, प धऽ | प म, | ग मा, प | ग रिऽ स नी स |
नी ग ती ग | ई | व ही व | ही ब ही म |

ग म, ग म, प धऽ | प म, ग रिऽ ग म, | प म, | ग म, प धऽ |
रे म धा ब्धि | मा र ने ज | ई | स ही स |

नी स री स | रिऽ ग रिऽ स नि स | स नि धऽ प म, ग |
ही स ही अ | रे न ऋा स | पा ग ता क |

प म, | ग पा म, | गा रिऽ सा रिऽ | रिऽ नि स गा ग |
ई | क हैं नृ | सिं ह सं त | तो र त्या स |

ग म, ग म, प धऽ | प म, ||
ऊ मु नी य | ई ||

पाठ २५.

पृथ्वीछंद.

रा. पीलू, ताल च. जा. एक ताल विलंब काल मात्रा ८.

८/२ स गाऽ रि गऽ रि गाऽ | रिऽ सा रिऽ स नि धऽ प |
प ड म र म मा | स दा सु ल म ना |

ऽऽ नि सा म गा रि सा | नि सा रि स नि धु प |
क दा का स दा ॥ न डे क र ष ए |

ऽऽ नि सा गा रि नि सा | म गा रि रि नि सा |
त दा ज न न ले | य दा आ प दा ॥

ऽऽ स ग म प प ध प म ग रि म म | गा री गा रि गा म प
अ -रे स म ज ना | ब दा म रि स लै

ऽऽ नि ध म ध प म ग प म ग रि स ॥ म गा रि गा रि गा |
ग दा थै ग धा | र हे नृ सिं ह सा |

ऽऽ रि सा रि स नि ध प | नि सा म गा रि सा ||
व धा सुं ग म णो | स धा तुं न धा

पाठ २६

इंद्रवज्राछंद.

राग बेहागडा, ताल संकीर्ण जाती एक ताल म. का. मात्रा ९.

ऽऽ १/९ स नि ध प म ध प रि स | रि नि ध प स प म रि स |
१ सं तो ष नी मा | ध उ पा स ना तुं ॥
२ शो धे क दी तुं | म न शां त था वा |

|| ग म प ध प सं नि ध प | म ग रि ग म ग रि सा |
१ सा थी क री ने | स द सि द्ध था तुं ॥
२ ए वी स्थि ती ई | श्व र पा स जा वा |

|| म ग म प ध प सं सां | रिं नि ध प म ग रि सा |
१ स्व र्गे भ ही ए | गु ण सां भ ळे छे ॥
२ मु क्ती म हा त | त्व स दा ग ळे छ |

|| सं नि ध प म ध प रि स | रि नि ध प स प म रि स |
सं तो प थी सु | ख स दा म ळे छे
" " " " " | " " " " " "

पाठ २७

ललित छंद (शुद्धकामदा)

राग इरकल, कामोदी ताल च. जा तेताला मध्यकाल मात्रा १६.

|| ४ म प ध सं | सं प ध प म ग | रि ग रि प | प म ग रि स |
१ प र म ब्र | ह्म नुं | गा न गा | उ छुं ॥
२ अ नु ग्र हो | क रो | छो त मे | स दा |

|| स रि म म | म प ध प | सं नि ध प | प म ग रि ग स |
१ अ ति कृ ता | र्थ हुं | ना थ था | उ छुं ॥
२ न व व ळो | भ के | पा ड तो | क दा |

	मपधसं	सं रिं रीं	मं गं रिं सं	मं रिं सं निं धं प
१	दिनतणा	करो	नि त्य पो	प णो
२	प्रभुकरो	सदा	भ क्त र	क्ष णो

	पधरिंसं	सं पधं पं मं गं	सं पध	धपं मं गं रिं स
१	भवपनीं	प्रभू	प्रार्थना	सुणा
२	,, ,, ,, ,,	,, ,,	,, ,, ,,	,, ,,

पाठ २८

भुजंगीछंद.

रा. सारंग, ताल खंडजाती एक ताल मात्रा २० मध्यकाल.

	प म	नीं पा निं	पं मं रिं मं रीं स	नीं स रि म
१	न	हीं हुं स	मो का ज	गे श्री वि
२	स्त	तूं हूं क्ष	मा मा गि	ने शी श

	प मं रीं स	म	पा निं प निं	निं सं निं सं रीं
१	का मी	अ	ध र्मी व	हुं हुं स
२	ना मी	अ	नी वृ त्ति	मा री वि

	सं निं प म प	रिं मं पं निं पमं रिं सं	म	नीं पा निं
१	दा ना ज	गा मी	नि	वा रो तू
२	का रे ज	जा मी	द	हो तु ष्ट

॥	प् म् रि् म् री स	नी सा रि म	प म रि स
	मो सं चि	तो ने अ	गा मी ने
	मा वो गु	री स वै	यां मी

॥	म	प नि प नि	नि सं नि सं रिं
	न	मा मी न	मा मी न
	,,	,, ,, ,,	,, ,, ,,

॥	सं नि प म प	रि् म् प् नि् प् म् रि् स्	
	मा मी न	मा मी	
	,, ,, ,,	,, ,,	

पाठ २९

पृथ्वीछंद

राग परज, ताल च० जा० एक तालीमात्रा ८ मध्यकाल.

॥ ८/३	ध रीं सं रीं सं नि म ध	ध सा नि ध प म
	अ हो ज ग क रा	ब घे थ इ र ह्या

॥	म नी ध प म ग	नि स म ग म ध प ध
	स दा व्या पि ने	ज पू ह र घ डी

॥	नि सं रिं सं नि सं ध नि	रिं ग रिं रिं सं नि सं
	त ने म न वि वे	व्य था व्या पि नें

धᵛ नि स ग म ग रिᵛ स | रिᵛ ग रिᵛ रिᵛ स नि धᵛ नि |
वि ना तु ज क दी | ज नो ज ग त र्थी |

स नि धᵛ प म ग रिᵛ स | धᵛ रिᵛ स रिᵛ स नि म धᵛ |
न हीं मु क छे | न ही मु र ख चे |

धᵛ सा नि धᵛ प मा | म नी धᵛ प म गा
त शो प ण प छी | पि दा यु क छे

पाठ ३०

इंद्रवज्राछंद

रागिनी शुद्ध धनश्री, ता. संकीर्ण जा. एक ताल म. का. मात्रा ९

१/६ नि स म ग रि स नि ध प | नि स ग म प ग म ग रि
हे वि श्व ना दे | व द या नि धा

स नि ध प | ग म प ध प नि ध प म |
न | आ पो म ने म |

ग म प म ग रि स म ग रि स नि ध प |
द ति नू ज ज्ञा न |

*मध्यम शुद्धीची (मध्यम थाट करीत)

निसमगरिसनिधप | निसगमपगमगरिसनि ध प |
उ त्कृ ष्ट ये अ | र्च न नूं वि धा न ॥

गमपधपनिधपम | गमपमगरिसमगरिसनिधप ॥
ए का ग्र चि त्ते | ध रुं ता रुं ध्या न ॥

पाठ ३१

भुजंगप्रयातछंद

रा० हुसेनी कानडा, ता० खं० जा० ए० ताल मात्रा ९ मध्यकाल.

९ स | रीं रीं गऽ | मा प् धऽ निऽ धऽप | पम गऽ म प |
१ म | भू पा धे | ना ल क्ष | मा स र्व |
२ कि | धा पा प | क र्मो अ | मे उ ग्र |

मपमगऽ रिमगऽरि | म | पा सा स | रिस निऽ धऽ प स |
१ धा रो ॥ | अ | मा रा ब | धा सं क |
२ मा रे | त | मा रा वि | ना को ण |

निऽध निऽसगऽ | रि स निऽ रिस | प | सा निऽ धऽ प
१ टो ने नि | ता रो ॥ | अ | मे पा म
२ ते ने नि | वा रे | क | रो ना थ

म ग म प म | नि धृ प म ग म प म ग
१ रो मा णि | यो अ श
२ द ष्टी द | या नी वि

रि प म ग रि म ग रि | स | री री ग | मा प धृ नि धृ प
१ बा छ न | मी ये स | दा सू ष्टि
२ शा ल ,, | ,, ,, ,, | ,, ,, ,,

प म ग म प | म प म ग रि म ग रि
१ क र्ता कु | पा ल
२ ,, ,, ,, | ,, ,,

पाठ ३२

उपजातीछंद

रा० मांड, ता० मिश्रजाती एक ताल मध्यकाल मात्रा ७.

सा गा म | पा धा | प प गा प म | री सा ऽ
स च्चि दू घ | ना नं | द म मू स | म र्थ

प सा नी स | धा पा | प प गा प म | री सा ऽ
क रो स | दा मं | ग ल का र्य | स त्य

मा गा ग | मगू रीसरी सा | रि सा नी ध प | म गा री सा ||
भ क्तो म | ळी मं | ग ळ गी त | गा य ||

सा गा म | पा धा | प प गा प म | री सा ऽ
क रों स | दा ना | थ न मे स | हा य

पाठ ३३

जलोद्धतगतीछंद

राग सिंधडा, ताल च. जा. एक ताल मात्रा ४ मध्यकाल.

४ ध पा म | ध प म ग रि स नि | स सा रि | ग ग मा ||
प शु म | भ ग नु | व्य नी व्य | व स था ||

ध पा नि | प ध म प | ग गा म | प नि ध प म ग रि स ||
वि चा रि | स र वे | ज ने क | रि पृ था ||

म मा म | ग म प म | ध पा नि | स नि ध प म ग रि स ||
उ दा र | ब ल वा | न सु र | न र ने ||

नि सा रि | ग ग मा | प नी ध प | म प म ग रि स नि
भ णो प | ण ध न्यू | ठ रा वि | क र ने

पाठ ३४

भुजंगप्रयातछंद

रा. आनंदभैरवी, ताल खंडजाती एक ताल मात्रा ५ मध्यकाल.

५/ स | पा पा नि | ध प म ग म | ग रि गा म | प म ग रि |
१ न | मी ये स | दा स चि | दा नं द | रू प ॥
२ त | मे छो अ | मा रा म | भू अ न्न | दा ता |

ग | रि स नि ध प | नी सा स | म ग मा प |
१ न | मी ये म | दा स र्व | वि श्वा धि |
२ त | म छो अ | मा रा स | दा स व्य |

ग म प म ग रि | स | नि ध प म ध | म ग रि ग म |
१ रू प ॥ | न | मी ये स | दा दी न |
२ आ ता | प | रा भ क्ति | भा वे - अ |

प म ग ग म | ग प म म ग रि | स | पा पा नि |
१ बं धू द | या ल ॥ | न | मि ये स |
२ मे वि श्व | पा ल | ,, | ,, ,, ,, |

ध प म ग | म ग रि गा म | प म ग रि
१ दा सू | ष्टि क र्ती कृ | पा ल
२ ,, ,, ,, | ,, ,, ,, | ,, ,,

पाठ ३५

भुजंगप्रयातछंद

रा. भैरवी, ताल खंडजाती एक ताल मात्रा ५ मध्यकाल.

	५ प् नि	सा सा रि	गा मा प	धा पा म	ग रि गा
१	कृ	पा र्थी क	रो स र्व	रू हुं अ	मा रूं ॥
२	त	मे प्रा णि	ना सां भ	ळी ने वि	ला पो
		+	२	+	२

	स	री सा रि	गा मा ग	गा री ग	ग रि सा
१	कृ	पा र्थी क	रो स र्व	सृ ष्टी नुं	सा रूं ॥
२	क	रो छो कृ	पा थी क्ष	मा स र्व	पा पो
		+	२	+	२

	म	धा धा नि	सां सां रिं	रीं सां नि	धा पा
१	कृ	पा र्थी क	रो र क्ष	णो स र्व	का ल ॥
२	अ	भे दी न	ता न भ्र	ता थी त्रि	का ल
		+	२	+	२

	ग	पा धा नि	धा पा ग	गा गा म	ग रि सा
१	न	मो ये स	दा सृ ष्टि	क र्ता कृ	पा ल
२	,,	,, ,, ,,	,, ,, ,,	,, ,, ,,	,, ,,
		+	२	+	२

पाठ ३६

भुजंगप्रयातछंद

रा० मुखारी, ताल दिव्यसंकीर्ण जाती एक ता. (दादरा) मात्रा ६ म. का.

स | गा रीं स | सा स नि ध प म प | ध सा री म |
१ म | बे ना म | ती धैं ध | री प्रे म |
२ न | थी आ व | तो दुः ख | नो अं त |

रि म ग रि रि प म ग रि स | स | री म पा ध |
१ न्हा ता | अ | हो थ्य य |
२ के मे | प्र | मो प्रे म |

पा प म ग रि स | री म पा नि | ध प म ग रि स नि ध |
१ आ नं द | धी नि त्य | ध्या ता |
२ छां डी उ | गा रो ज | स्वा मी |

स | गा री स | सा स नि ध प म प | ध सा री म |
१ स | दा मा त | थ ता गु | णो स र्व |
२ त | जी ऋ द्धि | नें सि द्धि | जी पा वि |

रि म ग रि रि प म ग रि स | स | री म पा ध |
१ गा ता | न | मो जी व |
२ ला ता | ,, | ,, ,, ,, |

	पा पु म् ग् रि स	री मपा नि	धपम् ग् रि्स् नि् ध
१	त्रा ता दि	यां शां ति	दा ता
२	,, ,, ,,	,, ,, ,,	,, ,,

पाठ ३७

शुद्धकामदाछंद

गा० मंजरी, ताल तिश्रजाती एक ता० (जलददाग) मात्रा ६ म० का०

६	स स स सा रि	मा मा ग	मा प प ध म
१	वि प त्का ळ	मां	धैं यं आ प
२	प ति पा व	ना	मा ण ना प

	गा गा म	ग रि ग री ग	स रि प मा
१	शो	प्र भू कृ पा क	री.
२	तीं	प र म प्रे म	थी

	प म ग स रि ग स	सा ऽ ।	म म म पा ध
१	क ष्ट का प	शो	तु ज द या शि
२	प्रे र स न्म	ति	रा गु ण व ह्म

	सा सं निं धं पं म	ध रि रिं सं सं निं धं पं मं गं	म ग म ग मा	
१	ना	स र्व छ दृ	था	
२	ने	नि त्य वं द	ना	

	रि ग ग रिं ग	स रि प मा	प म ग सं रिं ग स	सा ऽ
१	प्र भू कृ पा नि	धे	रे द या घ	ना
२	,, ,, ,, ,, ,,	,,	,, ,, ,, ,, ,,	,,

पाठ ३८

मत्ताछंद

ग० सारंग, ताल च० जा० ए० ताल मात्रा ४ मध्यकाल.

नीं प म	रि स स रि	प म म रि	रि निं निं स
दू धे	पा णी	नि ज स म	की धूं

निं स रि म	रि म प नि	प नि सं नि	प म रि स
तें णें	अ ग्नि	प र त न	दी धूं

	म प निᵒ प	नीᵒ सा	निᵒ निᵒ रि स	सा सा
	त्या तो	मां थे	प य उ भ	रा ई

	निᵒ स स निᵒ	पा म प	रि स निᵒ स	निᵒ प म प
	नी चे	जा वा	भ रि च तु	रा ई

पाठ ३९.

विबुधप्रियाछंद.

रा. सोहनी, ताल मि. जा. एक ताल मात्रा ७ मध्यकाल.

	मा धᵒ नी स स	रींᵒ स नी स स	नी धᵒ नी स स
१	सा म आ दि उ	पा य त्र ण्य थि	का म ले वुं वि
३	सु द्ध नी न हि	बु द्धि दे वि स्व	सै न्य पा ळ वुं

	स नि धᵒ मा गा	सा ग गा म ग	गा रिᵒ सा नि स
२	च्या रि ने	तै न्य म्वा त्म नि	धा त नै व नि
४	पी त थी	दै व यो ग व	ने न भा ग धुं

	नी धᵒ नी स स	स नि धᵒ मा गा
२	जा य त म न	धा रि ने
४	स्व र्ग का ज य	ले म थी

पाठ ४०

पद नारायणीचें.

रा० नारायणी, ताल मिश्रजातीचा एक ताल मात्रा ७. म. का.

ग	पा धा नी	स नी पा	म गा री गा	सा सा	
न	मा मि	म हि पा	सु र म र्दि	नी	

सा	नी प्रा धा	स रि ग रि	स नि धा री
न	मा मि	मा . म	ख पा ली

सा सा	ग	पा धा नी	प प ग पा प प	ध ध ध
नी	न	मा मि	म हि प म स्त क	न ट न

नी प प	धा ध री	सा ग सा	नी प धा	धा नि पा
वे द वि	नो दि नी	मो दि नी	मा लि नी	मा नि नी

स नि प ध नि पा	गा पग पध रि	स नी पा	म गा री गा
प्र ण त ज न सौ	भा ग्य ज न नी	म हि पा	सु र म र्दि

सा सा	ग	पा धा नी	ऽ ग पा धा	ध नी धा
नी	न	मा मि	शं ख च	क शु

पा मा गा | पा पा | सा री | प मा गा | रि सा नी धा |

लां कु श | पा णी | श क्ति | से ना | म धु र |

सा सा | पा मा गा | म गा री सा | । गा पा धा | स नी धा पा |

वा णी | पं क ज | न य नी | पं न ग | वे णी |

। गा पा नी | ध पा म ग रि ग | ग सा नी धा | सा सा |

पा ली त | गु रू गु हं | पु रा | णी |

सा स सा नि ध | सा स सा ग | पा प पा प ध | धा नी पा |

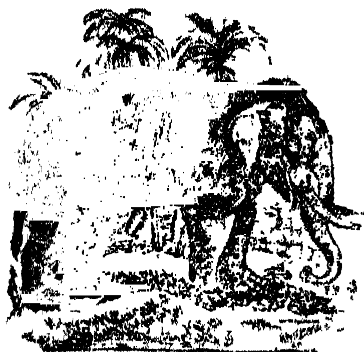
शं क रा र्ध श | री रि णी म | म स्त दै व त | रू पि णी |

गा प धा सां | रिं गा मं गं सां | सां नी प धा |

कं क णां कं | कृ ता न न नी | का त्या य नी |

गा पा ध रीं | सं नी पा | म गा री गा | सा सा |

ना रा य णि | म हि पा | सु र म र्दि | नी |



बडोदा वत्सल छापखाना.